उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग
मुख्य परीक्षा-2018
(सामान्य हिन्दी)
मॉडल पेपर-2

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोटः (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक प्रश्न के अंत में अंकित हैं।

(iii) पत्र, प्रार्थना-पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अपना अथवा अन्य का नाम, पता एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग लिख सकते हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

जीवन के समस्त आदर्श, नियम एवं सिद्धांत उसके अस्तित्व-रक्षण, पोषण एवं सुख-समृद्धि-वर्द्धन के लिये हैं; अतः मानव के वे समस्त व्यापार जिनसे उसके उक्त उद्देश्य में योग न मिले, गर्हित एवं त्याज्य हैं। अहिंसा, करुणा, परोपकार, सेवा, सहिष्णुता, क्षमा व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव इसीलिये स्पृहणीय एवं वंदनीय हैं और अकरुणा, निष्ठुरता, असहिष्णुता, निर्दयता और कठोरता गर्हित एवं त्याज्य। किंतु परिस्थितियाँ कभी-कभी ऐसी आ बनती हैं कि उनमें हिंसा अहिंसा का, अकरुणा करुणा का, असहिष्णुता सहिष्णुता का और कठोरता एवं निर्दयता क्षमा का पर्याय बन जाती है। ऐसे अवसरों पर अहिंसा, करुणा, क्षमा एवं सहिष्णुता समाज, राष्ट्र एवं विश्व के लिये ही नहीं, वैयक्तिक जीवन एवं कल्याण की दृष्टि से भी- पार्थिव ही नहीं, पारमार्थिक मंगल-विचार की दृष्टि से भी- अभिशाप सिद्ध होती हैं। निसर्गतः ऐसी स्थितियों में कर्तव्य-निर्णय व्यक्ति के लिये कठिन हो जाता है और यदि वह प्रमाद नहीं करता, साधन और साध्य के लिये कठिन हो जाता है तो उसके कार्य-व्यापार मांगलिक बीज-भाव की प्रेरणा से, स्थूल बाह्य रूप में अमंगलकारी प्रतीत होते हुए भी, वस्तुतः स्पृहणीय, रमणीय एवं अभिनंदनीय होते हैं। आततायी राक्षसों, भीमकाय दैत्यों तथा हिंस्र जंतुओं के प्राणि-संहारकारी कृत्य सृष्टि-विनाशकारी होने के कारण गर्हित एवं त्याज्य हैं। करुणा-सहचर परमात्मा की इस सृष्टि में उनके लिये स्थान नहीं। उनका विनाश सृष्टि के हित-रक्षण एवं अस्तित्व-रक्षण के लिये आवश्यक है, अतः उनके प्रति अकरुणा, असहिष्णुता एवं कठोरता ही नहीं, उनकी हत्या भी विश्व-मंगल-विधायिनी होने के कारण स्पृहणीय एवं अभिनंदनीय है, धर्म के चरम सौंदर्य की प्रतिष्ठात्री है।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिये। **5**

(ख) 'स्पृहणीय एवं वंदनीय' तथा 'गर्हित एवं त्याज्य' के अर्थ को उपर्युक्त अवतरण के आधार पर स्पष्ट कीजिये। **5**

(ग) प्रस्तुत गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिये। **20**

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार उत्तर लिखिये:

केवल अग्नि ही उन तत्त्वों में प्रमुख है जो भय उत्पन्न करता है। हम साँस लेते हैं, पृथ्वी पर पैर रखते हैं, जल में स्नान करते हैं। हम केवल अग्नि के निकट सम्मानपूर्वक जाते हैं। यही एक ऐसा तत्त्व है जो सदा जागरूक रहता है और दूर से देखने में सदा सुखकारी प्रतीत होता है। कभी-कभी कुछ शीतप्रधान देशों को छोड़कर हम जिस वायु में साँस लेते हैं, उस वायु को देख नहीं पाते। और कौन कहेगा कि ऐसा दृश्य मनोहर होता है! हम पृथ्वी को घूमते हुए नहीं देख पाते। उसके भीतर से जन्म लेने वाले वृक्ष तथा अन्यान्य वनस्पतियाँ इतने धीरे-धीरे बाहर निकलती हैं कि उन्हें देखने पर कोई आनंद नहीं आता। पृथ्वी को देखने पर भी किसी का धैर्य छूट सकता है, क्योंकि वह भी हो अंततः विशाल अग्निशिखाओं की एक पतली पपड़ी जैसी है जिसका निर्माण अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। इन दृश्यों के पीछे लालायित रहना धैर्य का द्योतक नहीं है।

नदी के रूप में प्राप्त होने वाला जल एकाध क्षण के लिये देखते समय अवश्य रमणीय प्रतीत होता है। फिर उसके बाद जल की नियमित गतिशीलता थकाने वाली हो सकती है। विविधता तथा रमणीयता की दृष्टि से केवल संपूर्ण समुद्र का जल ही अग्नि की प्रतिस्पर्द्धा कर सकता है। किंतु एक इमारत के प्रज्वलित होते समय जिस प्रकार का शानदार प्रदर्शन दिखाई देता है, उसकी तुलना में समुद्र का सर्वोत्तम प्रदर्शन भी- उदाहरणार्थ अटलांटिक महासागर का तूफान- कम रोमांचक प्रतीत होता है। जहाँ तक अन्य बातों का संबंध है, समुद्र की नीरसता तथा उकताहट के अलग-अलग अवसर होते हैं, भले ही वह पूर्ण रूप से प्रशांत लगता हो। किसी जाली या झँझरी के भीतर रखी हुई थोड़ी-सी अग्नि तब तक मनोरंजक और प्रेरणाप्रद लगती है जब तक आप उसे बाहर न निकालें। इस प्रकार की अग्नि एक मुट्ठी भरी मिट्टी अथवा गिलास-भरे जल के समान है जो आँखों के लिये आनंद का विषय तो बनती रही है, वह किसी गौरवपूर्ण महत्ता का संकेत करती है। अन्य तत्त्व, भले ही वे प्रचुर नमूनों के रूप में विद्यमान हों, अग्नि की पवित्रता की अपेक्षा हमें कम प्रभावित करते हैं। पौराणिक आख्यान के अनुसार केवल अग्नि को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतारा गया था; अन्य तत्त्व प्रारंभ से ही यहाँ पर विद्यमान थे।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिये। 5

(ख) अग्नि की शोभा समुद्री जल की शोभा से किस प्रकार श्रेष्ठ है? विचार कीजिये। 5

(ग) प्रस्तुत गद्यांश का संक्षेपण कीजिये। 20

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

(क) प्रदेश के मुख्य सचिव द्वारा जारी की जाने वाली इस अधिसूचना का प्रारूप प्रस्तुत कीजिये कि आगामी माह की पहली तारीख से राज्य सरकार के सभी कार्य राजभाषा हिन्दी में ही होंगे। 10

(ख) परिपत्र का आशय स्पष्ट करते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं को लिखिये, साथ ही परिपत्र का एक प्रारूप प्रस्तुत कीजिये। 10

4. निम्नलिखित उपसर्गों/प्रत्ययों से एक-एक शब्द की रचना कीजिये: 10

प्रति, वि, परि, सु, आ, इत, वान, आपा, इष्ठ, इया

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिये: 10

खंडन, गुप्त, कुलटा, परितोष, मूक, विशिष्ट, संकीर्ण, स्थावर, क्षणिक, कृपा

6. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिये: 5

(i) आज बजट के ऊपर बहस होगी।

(ii) बेटी पराए घर का धन होता है।

(iii) वहाँ सब श्रेणी के लोग उपस्थित हुए।

(iv) इतनी आलस्यता ठीक नहीं है।

(v) इस विषय में मेरे विचार मैं पहले प्रकट कर चुका हूँ।

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिये: 5

आयकर, आर्शिवाद, कवियत्री, निरिक्षण, प्रज्ज्वलित

7. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिये एक-एक शब्द लिखिये: 10

(i) जो दूसरों में केवल दोषों को ही खोजता हो।

(ii) भूत, वर्तमान और भविष्य को देखने वाला।

(iii) वह मार्ग जो चलने में कठिनाई पैदा करता है।

(iv) जिसका कोई अर्थ न हो।

(v) पिता से प्राप्त हुई संपत्ति।

8. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिये और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये: 30

(i) अपनी खिचड़ी अलग पकाना

(ii) घुटने टेकना

(iii) छप्पर फाड़कर देना

(iv) बाग-बाग होना

(v) माथे पर शिकन न आना

(vi) अंधों में काना राजा

(vii) उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई

(viii) कौआ चले हंस की चाल

(ix) खोदा पहाड़ और निकली चुहिया

(x) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद